आम के बीज से अनार नही उगता
पक्षी की संतान पक्षी ही होती
पशु भी पशु को ही जन्म देता
मनुष्य भी मनुष्य को जन्मता
जैसा बीज वैसा ही फल उगता
फिर क्यों मनुष्य अलग अलग
योनि में पुनर्जन्म ले कर आए
कुत्ते बिल्ली में क्यों ले जन्म
84 लाख योनि कहना है गलत
आत्मा लेती केवल 84 जन्म
आत्मा का पिता भी है आत्मा
परम है पिता तो परमात्मा कहलाता
गुण रूप में है वो एक समान
हमको भी वैसा ही बनाता
है वो ज्ञान का सिन्धु
रूप में बिंदु , ज्ञान का सूर्य
प्रेम शक्ति सुख शांति का सागर
कैसे हमें वो दुःख दे सकता
जो होगा वो ही तो देगा
सुख करता दुःख हरता
सर्व व्यापी हो न सके

पिता पुत्र का नाता हमारा
पुत्र पिता का पिता हो न सके
आत्मा अलग है परम आत्मा सेदोनों का है
अलग अलग कर्त्तव्य
समय अनुसार सब पार्ट बजाते
संगम पर प्रभु अवतार लेते
टीचर बन हमे सही राह देखाते
सतगुरु बन सदगति दिलाते
अंध श्रदा से अब निकलो भाई
आत्मा हु तुम समझो भाई भाई।

ॐ शांति